अनुवाद का अर्थ

अनुवाद से तात्पर्य है किसी एक भाषा में कही हुई बात को दूसरी भाषा में कहना। अनुवाद एक भाषिक प्रक्रिया है अथवा भाषिक प्रक्रिया का परिणाम है, जिसमें एक भाषा (स्रोत भाषा) में अभिव्यक्त कथ्य को दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में संप्रेषित किया जाता है।

अनुवाद की परिभाषा :- अनुवाद शब्द 'वद्' धातु में 'अनु' उपसर्ग और 'धञ्' प्रत्यय के योग से बना है। इसमें 'अनु' का अर्थ है 'पीछे' और 'वद्' धातु का अर्थ है 'बोलना' या 'कहना'। इस प्रकार पूर्व-कथित का अनुसरण करके अभिव्यक्त किए गए कथन को अनुवाद कहते हैं या एक भाषा में उपलब्ध कथन-सामग्री का अनुसरण करते हुए उसे दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना ही अनुवाद है।

अनुवाद का व्युत्पत्ति परक अर्थ है - पुण: कथन, पुण: आवृत्ति, एक बार कही हुई बात को दुबारा कहना। इसमें पुनरावृत्ति होती है 'अर्थ' की, न की 'शब्द' की। अनुवाद के लिए अंग्रेजी में प्रयुक्त शब्द 'Translation' लैटिन भाषा के 'Trans' अर्थात 'पार' और 'Lation' अर्थात 'ले जाना', 'वहन करना' के योग से बना है। जिसका व्युत्पत्तिपरक अर्थ है 'पारवाहन' अर्थात एक स्थान-बिंदु से दूसरे स्थान-बिंदु पर ले जाना। यह स्थान बिंदु भाषिक पाठ है। इसमें भी ले जाने वाली चीज अर्थ होती है, शब्द नहीं। अतः स्पष्ट है कि इन दोनों ही भाषा में प्रयुक्त शब्दों के व्युत्पत्तिपरख अर्थ व्यावहारिक धरातल पर एक समान है

डॉ सुरेश कुमार ने अनुवाद के तीन अर्थ-संदर्भ माने है - समभाषिक, अन्यभाषिक और अंतरसंकेत परक। समभारषक संदर्भ में अर्थ की पुनरावृति एक ही भाषा की सीमा के भीतर होती है, परंतु इसके आयाम अलग अलग हो जाते हैं जो मुख्यतः दो है- कालक्रमिक और समकालीक।अन्य भाषिक अनुवाद दो भाषाओं के बीच होता है। यह दो भाषाएँ ऐतिहासिकता और क्षेत्रीयता के समन्वित मापदंड पर स्वतंत्र भाषाओं के रूप में पहचानी जाती है। यही कारण है कि आज व्यवहार में 'अनुवाद' शब्द से अन्यभाषिक अनुवाद का अर्थ लिया जाता है। संस्कृत भाषा पर 'छाया' शब्द तथा उर्दू का 'तर्जुमा' शब्द इसी स्थिति का संकेत करने के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं।

अनुवाद की परिभाषाएँ: -

विभिन्न विद्वानों द्वारा अलग-अलग उद्देश्य को ध्यान में रख कर दी गई परिभाषाओं का अध्ययन अनुवाद के स्वरूप को उसकी समग्रता में समझने हेतु विशेष रूप से सहायक होगा।

जे. सी. कैटफोर्ड के अनुसार - एक भाषा की पाठ्य-सामग्री को दूसरी भाषा के समानार्थक पाठ्य सामग्री द्वारा प्रतिस्थापित करना अनुवाद कहलाता है।

भोलानाथ तिवारी के अनुसार - भाषा धनात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन अर्थात एक भाषा के प्रतिकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग। इस प्रकार अनुवाद निकटतम समतुल्य और सहज प्रतिप्रतीकण प्रक्रिया है।

रविंद्र श्रीवास्तव व कृष्ण कुमार गोस्वामी के अनुसार - एक भाषा की पाठ सामग्री में अंतर्निहित तथ्य का समतुल्यता के सिद्धांत के आधार पर दूसरी भाषा में संगठनात्मक रूपांतरण अथवा सर्जनात्मक पुनर्गठन को ही अनुवाद कहा जाता है।

अनुवाद का महत्व

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी और संचार क्रांति का युग है। ज्ञान-विज्ञान के निरंतर विस्तृत होते क्षितिज ने विश्व को एक ग्राम (ग्लोबल विलेज) की संज्ञा से अभिहित कर दिया है। भूमंडलीकरण की अवधारणा और विश्वग्राम की संकल्पना का आधार निश्चित रूप से संचार तथा अनुवाद को ही माना जा रहा है। आज का युग अनुवाद का युग है। उदारीकरण के फलस्वरूप देश-विदेश के अनेक भिन्न भाषा-भाषी समुदायों के साथ मनुष्य का व्यवहार तेजी से बढ़ रहा है। एक ही देश में व्यवहृत विभिन्न भाषा-भाषियों से संपर्क का एकमात्र उपकरण अनुवाद ही है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साहित्यिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, पारंपरिक, वैज्ञानिक, वाणिज्य और वैचारिक आदान-प्रदान अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो पाया है। ज्ञान-विज्ञान की अधुनातन सूचनाओं को प्रसारित करने में अनुवाद की उपादेयता असंदिग्ध है। इन सभी कारणों से अनुवाद के अनेक-विध महत्वपूर्ण आयाम हमारे समक्ष उभर कर आए हैं।

1. सांस्कृतिक समन्वय, बहु-संस्कृति और विश्व-शांति का माध्यम अनुवाद :

संसार में समय-समय पर महत्वपूर्ण सभ्यताओं और संस्कृतियों का विकास हुआ है। इनके बीच परस्पर विचारों का आदान-प्रदान अनुवाद के माध्यम से हुआ है। मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान करने वाले संसार के धार्मिक साहित्य- भारतीय दर्शन, गीता, उपनिषद, त्रिपिटक, बाइबिल, कुराण का प्रचार-प्रसार अनुवाद के माध्यम से संभव हो पाया है। विविध राष्ट्रों की सांस्कृतिक विरासत के मध्य एक सेतु बांधने का काम अनुवाद ने किया है। आज अनुवाद ने अलग-अलग राष्ट्रों की सांस्कृतिक विरासतों के मध्य एक ऐसे सेतु का निर्माण किया है जिसकी परिणति राजनीतिक स्तर पर बहु-संस्कृति के रूप में उजागर हुई है। यह सांस्कृतिक समन्वय राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर परस्पर शांति बहाल करके विश्व-शांति स्थापित करने का कार्य अनुवाद के बिना संभव नहीं हो सकता।

2. विश्व साहित्य, ज्ञान और तकनीकी के प्रचार-प्रसार का माध्यम :

विश्व साहित्य के आदान-प्रदान तथा ज्ञान और तकनीकी के प्रचार-प्रसार में अनुवाद की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। विश्व मंच पर अनुवाद ही वह माध्यम है जिसने शेक्सपियर, टॉलस्टॉय, इलियट, मिले, मोपासा, कामू काफ्का, पात्र, कालिदास, वाल्मीकि, टैगोर, प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों की अपनी-अपनी दुनिया से दूसरी भाषा के पाठकों को रू-बरू करवाया। प्राचीन काल में सर्वप्रथम आरबों ने भारतीय गणित-शास्त्र, खगोल-शास्त्र और आयुर्वेद से प्रभावित होकर उसे अरबी भाषा में दुनिया के समक्ष रखा। बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से चीनी विद्वानों ने भारतीय ग्रंथों का अनुवाद किया। रामायण, महाभारत, भगवत गीता, पंचतंत्र आदि अरबी फारसी में अनुदित हुए। मैक्स मूलर ने भारतीय उपनिषदों का अंग्रेजी में अनुवाद किया। भारत के भिन्न-भाषा-भाषी क्षेत्रों में रचित महत्वपूर्ण साहित्य अनुवाद के माध्यम से ही राष्ट्रीय स्तर पर आ सका है। भारतीय साहित्य की अवधारणा का आधार भी निसंदेह अनुवाद है। इसी प्रकार भारतीय साहित्य अनुवाद के माध्यम

से विश्व साहित्य पटल पर पहुंचा है। रवींद्रनाथ ठाकुर की 'गीतांजलि', प्रेमचंद का 'गोदान', जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' जैसी रचनाएं इसका उदाहरण है। विज्ञान के आविष्कारों की जानकारी चिकित्सा संबंधी खोज तकनीकी उपलब्धियां और ज्ञान का लाभ अनुवाद के माध्यम से ही विश्व को प्राप्त हो रहा है। जो अनुवाद के महत्व का ही द्योतक है।

3) भाषा-परक आदान-प्रदान और विश्व भाषा का निर्माण :

अनुवाद विश्व भाषा के विकास की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक भाषा से दूसरी भाषा में साहित्य का अनुवाद करते समय विभिन्न समाजों की अलग-अलग परंपराएं एवं संस्कृति या एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरित हो जाती है। इसके साथ उस संस्कृति विशेष की मान्यताओं और भाव से जुड़े विशिष्ट शब्द भी वहन करते हैं जिससे लक्ष्य भाषा पुष्ट और समृद्ध होती है। वर्तमान में प्रयोग में लाई जा रही हिंदी, अंग्रेजी, फ्रेंच, लैटिंग, फारसी आदि भाषाओं के मध्य इस प्रकार के आदान-प्रदान को स्पष्ट देखा जा सकता है। इस क्रम में अनुवाद निश्चित रूप से आगे चलकर विश्व भाषा के विकास में सहयोगी बनता है।

4) हिंदी साहित्य को विश्व साहित्य और संस्कृति से जोड़ने का संपर्क सूत्र :

अनुवाद एक भाषा के साहित्य को दूसरी भाषा तक ले जाने का महत्वपूर्ण काम करता है। इस दृष्टि से अनुवाद तुलनात्मक साहित्य की मुख्य धुरी है। विश्व की प्रमुख भाषाओं की विशिष्ट साहित्यिक कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद के द्वारा ही संभव हो सका है। इस दृष्टि से हिंदी के महत्वपूर्ण रचनाकार और उनकी रचनाओं का विश्व की विविध भाषाओं में अनुवाद किया गया है। और विश्व के महत्वपूर्ण रचनाकार और विशिष्ट रचनाओं से उसकी तुलना की गई है। कबीर और फ्रांस भाषा के रैबल, निराला और एजरा पाउंड, पंत और वर्ड्सवर्थ, अज्ञेय और टी. एस. इलियट, प्रेमचंद और रूस के मैक्सिम गोर्की, जयशंकर प्रसाद और विलियम शेक्सपियर, आदि का तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद के द्वारा ही संभव हो सका है। अनुवाद के द्वारा ही भारत की विविधता में एकता रखने वाली संस्कृति भारत की प्रमुख भाषा हिंदी में निर्मित साहित्य के साथ-साथ विश्व की विभिन्न संस्कृतियों से संपर्क स्थापित कर सकी है।

कुल मिलाकर अनुवाद हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति को विश्व साहित्य और संस्कृति से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस प्रकार अनुवाद सांस्कृतिक समन्वय, साहित्य के प्रचार व विकास और भाषाई आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।